

## बुखार और बीमारी



कार्ल वुंडरलिश

वैसे तो किसी मरीज़ का शरीर गर्म महसूस होना चिंता का विषय रहता है मगर तापमान नापकर उसका रिकॉर्ड रखना और उसका सम्बंध विशिष्ट रोगों से देख पाना उन्नीसवीं सदी में ही शुरू हुआ है।

बताते हैं कि गैलीलियो ने पहला तापमापी 1592 में बनाया था मगर इसमें तापमान का कोई पैमाना नहीं था और इसमें वायुमंडलीय दाब का बहुत असर पड़ता था। पहला पैमाने वाला तापमापी सेंटोरियो नामक इतालवी वैज्ञानिक ने 1625 में बनाया था मगर यह काफी बड़ा-सा उपकरण था और इसका उपयोग करना आसान काम नहीं था। फिर भी इसकी मदद से मरीज़ का तापमान लिया जा सकता था। अलबत्ता, बात तब बनी जब फैरनहाइट ने तापमापी में पारे का उपयोग किया। इसके चलते एक तो इस तापमापी की साइज़ ठीक-ठाक हो गई और तापमान नापने में समय भी कम लगने लगा।

मगर इतना सब हो जाने के बाद भी चिकित्सकों ने तापमापी को आसानी से अपनाया नहीं। इसे एक आम डॉक्टरों और ज़ारा बनाने के लिए बहुत पापड़ बेलने पड़े थे। जैसे हमें बोरहावे ने अपने छात्रों के साथ मिलकर सत्रहवीं सदी के अंतिम वर्षों में तापमापी का न सिर्फ उपयोग करना शुरू किया बल्कि इसकी मदद से उन्होंने एक सामान्य व्यक्ति के शरीर के तापमान में दैनिक उतार-चढ़ाव का रिकॉर्ड रखा और यह भी दर्शाया कि जब कंपकंपी छूटती है तो तापमान भी बढ़ता है। इसके अलावा वे यह भी देख पाए थे कि तापमान बढ़ने पर नब्ज की गति भी बढ़ जाती है। उनका कहना था कि तापमान रोग की निगरानी का अच्छा तरीका है मगर बाकी लोग नहीं माने।

इस संदर्भ में जर्मन चिकित्सक कार्ल वुंडरलिश की पुस्तक का निर्णायक महत्व रहा। उन्होंने 1868 में 25,000 मरीज़ों के कोई 10 लाख तापमान रिकॉर्डिंग के आधार पर यह दर्शाया कि एक सामान्य व्यक्ति का तापमान 36.3 से 37.5 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। इससे कम या ज़्यादा तापमान बीमारी का संकेत है। उन्होंने ये सारे तापमान जिस तापमापी से रिकॉर्ड किए थे वह करीब 1 फुट का था और उसे बगल में रखकर तापमान नापने में 10 मिनट से ज़्यादा लगते थे। वुंडरलिश ने अपनी पुस्तक 'ऑन दी टेम्परेचर इन डिजीज़' में शरीर के तापमान और बीमारियों के सम्बंध पर काफी विस्तार में लिखा था। लगभग इसी समय 1866 में थॉमस एल्बट ने तापमापी को काट-छाटकर 6 इंच का बना दिया। इसके बाद तो थर्मामीटर लोकप्रिय हुआ और अब तो आप जानते ही हैं।

